राँची विश्वविद्यालय के अन्तर्गत पीएच० डी० शोधोपधि हेतु

प्रस्तुत

शोध-प्रारूप

श्रीमद्भगवद्गीता और कठोपनिषद् में वर्णित आत्मतत्व का तुलनात्मक अध्ययन

मानविकी संकाय के अन्तर्गत

शोध निर्देशिका:

डॉ० कंचन कुमारी

सहायक प्राध्यापिका
संस्कृत विभाग
कार्तिक उराँव महाविद्यालय,
गुमला

शोधार्थी:

रेणुका कुमारी

स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

श्रीमद्भगवद्गीता और कठोपनिषद् में वर्णित आत्मतत्त्व का तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

गीता की गणना प्रस्थान त्रयी में की जाती है, जिसमें उपनिषद् और ब्रह्मसूत्र भी सम्मिलित है। भारतीय परम्परा के अनुसार गीता का स्थान वही है जो उपनिषद् और धर्मसूत्रों का है। उपनिषदों को गौ(गाय) और गीता को उसका दुग्ध कहा गया है। उपनिषदों की जो अध्यात्म विद्या थी उसको गीता सर्वांश में स्वीकार करती है। उपनिषदों की अनेक विधाएँ गीता में है।

श्रीमद्भगवद्गीता महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित है। यह महाभारत के 'भीष्म पर्व' से लिया गया है। गीता में कुल सात सौ श्लोक है। कृष्ण भगवान के 574 श्लोक है, अर्जुन के 85 श्लोक है, संजय के 40 श्लोक है और धृतराष्ट्र के 1 श्लोक है। श्रीमद्भगवद्गीता प्राचीन ग्रन्थ एवं संस्कृत साहित्य का अलौकिक ग्रन्थ है जिसमें वेदों उपनिषदों एवं दर्शन से संबधित है। गीता सर्वशास्त्रमयी सार्वभौमिक ग्रन्थ है। गीता में उन सभी विषयों का समावेश है जो हमे पृथक-पृथक शास्त्रों में प्राप्त है।

कठोपनिषद् उपनिषदों में बहुत प्रसिद्ध है यह यजुर्वेद की कठ शाखा से सम्बधित है। कठोपनिषद् में कुल दो वल्लियाँ है और प्रत्येक अध्याय में तीन-तीन वल्लियाँ है इसमें यम नचिकेता की कथा का वर्णन है। सर्वप्रथम यम नचिकेता की कथा का वर्णन तैतरीय ब्राह्मण में मिलता है। इसके अतिरिक्त नचिकेता का उपाख्यान महाभारत के अनुशाषण पर्व में भी आया है। आत्मतत्त्व विवेचन की दृष्टि को कठोपनिषद् अत्यन्त प्रसिद्ध है। कठोपनिषद् में लगभग 119 (120) मन्त्र है।

महत्व

श्रीमद्भगवद्गीता हमें हमारी संस्कृति और परंपरा से परिचित करती है। श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों का जिक्र करने से हमे रोजमर्रा की जिंदगी की विभिन्न समस्याओं का समाधान खोजने में मदद मिल सकती है। श्रीमदभगवद्गीता को पढ़ना हमें जीवन के बारे में सच्चाई से परिचित कराता है, अंधविश्वास और रूढ़ी मान्यताओं से मुक्ति पाने में हमारी मदद करती है।

कठोपनिषद् कृष्ण यजुर्वेद से सम्बन्धित है। जीवन के रहस्यमय सत्यों का अवगाहन संक्षिप्त और सुस्पष्ट पूर्णत के साथ करने के कारण इस उपनिषद् की महनीयता है जीवन और मृत्यु के आधारभूत प्रश्नों, जीवन से सम्बन्धित विभिन्न पक्षो के अर्थ इस उपनिषद् की विषयवस्तु है।

उद्देश्य

गीता का उद्देश्य ही परमात्मा के ज्ञान आत्मा के ज्ञान और सृष्टि विधान के ज्ञान को स्पष्ट करना है। गीता वास्तव में चरित्र निर्माण का सबसे बड़ा और उत्तम शास्त्र है।

कठोपनिषद् शांतिपाठ से शुरू होता है जो कृष्ण यजुर्वेद के लिए अद्वितीय है शांतिपाठ का उद्देश्य अध्ययन में आने वाली बाधाओं को दूर करना है।

कवि परिचय

श्रीमद्भगवद्गीता और कठोपनिषद् के रचियता महर्षि वेदव्यास है। इनका जन्म अषाढ़ मास के पूर्णिमा के दिन यमुना नदी के द्वीप पर हुआ इनके पिताजी का नाम पराशर ऋषि एवं माताजी का नाम सत्यवती है। पत्नी आरुणी और पुत्र शुकदेव है।

महर्षि वेदव्यास जी एक महान कवि, लेखक और तत्वदर्शी ज्ञानी थे।

महर्षि वेदव्यास के प्रमुख रचनाएँ -

महाभारत

पुराण

वेद

उपनिषद् ।

पूर्ववर्ती शोधकार्य

प्रस्तुत शोध-विषय में अन्य किसी भी अनुसन्धाता के द्वारा कोई भी अनुसन्धान दृष्टि गोचर नहीं होता ।

शोध प्रविधि

1. विश्लेषणात्मक विधि
2. प्रश्नोत्तर विधि
3. साक्षाकारात्मक विधि

क) प्रस्तावित शोध-प्रबन्ध के लिए जहाँ कही भी श्रीमद्भगवद्गीता और कठोपनिषद् मे आत्मतत्त्व से संबंधित विषय उपलब्ध हो उसे संगृहित कर उसका तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जायेगा।

ख) प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध सम्बधित आवश्यक ग्रथों के लिए पुस्तकालय का उपयोग किया जायेगा।

शोध परिसीमन

महर्षि वेदव्यास के आदि जीवन से लेकर रचनाओं के परिचय से लेकर आत्मतत्व के सिद्धांत तक ।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य और महत्व

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य महर्षि वेदव्यास का श्रीमद्भगवद्गीता और कठोपनिषद् में आत्मतत्त्व के विभिन्न पहलुओ का आधुनिक युग के सामने लाना है। अब तक वेदव्यास के ग्रथों या भगवद्गीता, कठोपनिषद् पर जो भी शोध कार्य हुए है उनमें आत्मतत्व के बारे में अभी तक शोध कार्य में परखने का प्रयास भी नहीं किया गया है ऐसी स्थिति में आत्मतत्व को विभिन्न पहलुओ में यह शोध-कार्य आधुनिक युग में सहयोग करेगा।

शोध प्रबन्ध को निम्नलिखित प्रारूप में प्रस्तुत करने का विचार है।

अध्याय विभाजन

प्रथम अध्याय - ग्रन्थ परिचय एवं कवि परिचय

क)श्रीमदभगवद्गीता का परिचय

ख)कठोपनिषद् का परिचय

ग) महर्षि वेदव्यास का परिचय

घ) व्यास की रचनाओ का परिचय

द्वितीय अध्याय - आत्मा का स्वरूप

क)आत्मा का स्वरूप एवं परिचय

ख)विविध दर्शन में आत्मा का स्वरूप

ग) वेदों में आत्मा का स्वरूप

घ) उपनिषदों में आत्मा का स्वरूप

तृतीय अध्याय - श्रीमद्भगवद्गीता में आत्मतत्व

क)श्रीमद्भगवद्गीता में आत्मतत्व

ख)कर्मयोग में आत्मतत्व

ग) भक्ति योग में आत्मतत्व

घ) ज्ञानयोग में आत्मतत्व

चतुर्थ अध्याय - कठोपनिषद् में आत्मतत्त्व

क)कठोपनिषद् में आत्मतत्त्व

ख) प्रथम अध्याय में आत्मतत्व

ग) द्वितीय अध्याय में आत्मतत्व

पञ्चम अध्याय - श्रीमदभगवद्गीता और कठोपनिषद् में तुलना

क)श्रीमदभगवद्गीता और कठोपनिषद् में आत्मतत्त्व की तुलनात्मक

ख)अर्जुन और नचिकेता का तुलनात्मक

ग) गीता और कठोपनिषद् कथा में तुलनात्मक

उपसंहार

शोध-ग्रंथ सूची

नोट - प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के शीर्षक, उपशीर्षक तथा अवान्तर बिन्दुओं के निर्देश में आवश्यकतानुसार संशोधन तथा परिवर्धन किया जा सकता है